जवाहर नवोदय विद्यालय
VIDYALAYA
(मानव संसाधान विकास मंत्रालय)
(स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग) (भारत सरकार)
ग्राम/पोस्ट – **खेरेंग्जुरी**, जिला – उत्तर त्रिपुरा
ग्राम/पोस्ट – **खेरेंग्जुरी**, जिला – उत्तर त्रिपुरा
त्रिपुरा. पिन – ७९९२६२
2040004
के.मा.शि.बो.स्कूल संख्या :३३५१३
के.मा.शि.बो. संबद्धता संख्या :२०४०००४

JAWAHAR NAVODAYA
(Ministry of human resource development, Govt. Of India
Dept. Of secondary and higher secondary education
KHERENGJURI, DHARMANAGAR, NORTH TRIPURA
TRIPURA – 799262 Tele No: 03822 – 290829
CBSE School No. – **33513,** CBSE Affiliation No. -

জওহর নবোদয় বদ্যালয়– গ্রাম/পোস্ট , খরেনেজুরী– জলিা , উত্তর ত্রপুিরা– পনি , ৭৯৯২৬২.ত্রপুিরা ,
(মানব সম্পদ উন্নয়ন মন্ত্রক ,(বভিাগ সাক্ষরতা ও শক্ষিা স্কুল) ,(ভারত সরকার
E.Mail: jnvkherengjuri@rediffmail.com Tele No: 03822 – 290829 Website: northtripura.jnv.academy.

F.No.2-18/JNVK/N.Tripura/2017-18/ Dated: 05.01.2018

जाट–जाटिन नृत्य एक दृष्टि में

भारत परम्पराओं का देश है, सांस्कृतिक विविधताओं का देश है । इसके विभिन्न प्रदेश अनेक सांस्कृतिक विशिष्टताओं को समेटे हुए हैं । प्रत्येक प्रदेश स्वयं में अनगिनत नृत्य, संगीत और कलाएं समेटे हुए हैं । ये कलाएं प्रतीक हैं हमारी समृद्ध विरासत और परंपरा की । बिहार ऐसे ही कलात्मक समृद्ध प्रदेशों में से एक है ।

बिहार प्रदेश है, किसानों का, ग्रामीण संस्कृति का । बिहार का ग्रामीण लोक है; अनपढ़, अशिक्षित किन्तु भोले–भाले लोगों का । उनका कि जिनके कार्य कठिन है, लेकिन मन मिठास से भरा हुआ है । उनकी लोक –कलाएं भी ऐसी ही हैं ; सहज, मधुर और सौम्य ।

जाट–जाटिन उत्तरी बिहार का सबसे प्रसिद्ध और प्रचलित लोक नृत्य है । कोशी और मिथिला क्षेत्र में इसकी विशिष्ट ख्याति है ।यह नृत्य एक किवदंति कथा पर आधारित है । कहते हैं कि, एक जाट–जाटिन थे, जो एक–दूसरे से अत्यंत प्रेम करते थे, सच्चा, हार्दिक और आनुभूतिक । परन्तु तथाकथित सामाजिक सिद्धांतों ने उन्हें अलग कर दिया । वे एक दूसरे से दूर हो कर, अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में, बेहद दुःख में, वंचना में किसी तरह जिए । इस नृत्य का मूल आधार उनके पवित्र प्रेम की स्मृति को प्रस्तुत करना तथा व्याख्यायित करना है । मूलतः जोड़े में किया जाने वाला यह नृत्य जाट–जाटिन के उसी प्रेम कि कलात्मक प्रस्तुति है , उन्हें श्रद्धांजलि है । प्रारंभ में यह नृत्य इस प्रेम की कलात्मक प्रस्तुति ही थी । बाद में यह सामाजिक समस्याओं से भी जुड़ता गया । सूखा, बाढ़, गरीबी, प्रेम, दुःख, पति–पत्नी/प्रेमी–प्रेमिका की आपसी बात–चीत, तू–तू–मैं–मैं आदि सामाजिक परिस्थितियाँ और प्राकृतिक आपदाएं इस नृत्य को विस्तार देती गई ।

इस वैविध्य के कारण इस नृत्य के कई संस्करण विकसित हुए । ग्रामीण वेश–भूषा, धोती, गमछा, साड़ी पहने हुए नर्तक अपनी भूमिका को वास्तविक रूप के और ज्यादा निकट लाने के प्रयास में कभी–कभी चेहरे पर मुखौटा भी लगाते हैं ।

मूलतः नवयुवतियों और कम आयु कि गृहणियों द्वारा जोड़े में किया जाने वाला यह नृत्य बरसात के मौसम में आधी रात को चाँद की रोशनी में किया जाता है । बरसात की रातों में लड़कियां किसी घर के बड़े से आँगन में इकट्ठी होती हैं । कुछ लड़कियाँ पुरुष वेश धारण कर जाट बनती हैं और स्त्री वेश पहनकर जाटिन । फिर क्या.....? जोड़े बनाकर ये

युवतियाँ , गले में ढोल लटकाकर आधी रात से सुबह तक नृत्य करती हैं । जाट–जाटिन के इस नृत्य को यकाहा नृत्य भी कहते हैं ।

इस नृत्य के साथ गाए जाने वाले गीत मूलतः बरसात पर आधारित होते हैं । नृत्य की शुरुआत में पहले यक्ष का आह्वाहन और बरसात की प्रार्थना की जाती है । प्रेमी यक्ष बादलों पर सवार हो कर आएगा और फिर बरसात अपनी रिमझिम से न केवल खेत और फसलों को बल्कि किसान के मन को भी हरा–भरा कर देगी । इसके बाद वास्तविक नृत्य की शुरुआत होती है ।

नृत्य की भंगिमाएँ गीत के भावों के आधार पर निर्धारित की जाती हैं । सुकुमार शारीरिक गति के साथ होने वाली इसकी मुद्राएँ सजीव और ऊर्जावान होती हैं । नृत्य करते समय प्रत्येक गति के दौरान शरीर चार कदम आगे और फिर चार कदम पीछे जाता है । ऐसा करते समय पैरों की चाल बहुत जटिल नहीं होती, बल्कि बाहों और पैरों की

चाल बेहद शान्तिप्रद और ऊर्जावान होती है । इसकी लय में 6,7 या 8 ताल होते हैं । जैसे:- दादरा, कहरवा, तीवता ।

बरसात, कृषि और भावुकता से जुड़ा यह नृत्य न केवल उन वैज्ञानिक-संचार साधनों से विहीन ग्राम बालिकाओं के मनोरंजन से जुड़ा हुआ है, बल्कि निज विचार प्रस्तुतीकरण और सामाजिक सन्दर्भों एवं समस्याओं के विषय में जागरूकता फैलाने वाला भी है ।

भूमंडलीकरण, गाँवों के शहरीकरण एवं तेजी से बदलती आधुनिकता कि हवा में यह नृत्य लुप्तप्राय हो गया था, पर संचार के साधनों एवं मानव के सांगीतिक प्रेम ने कमोबेश कुछ परिवर्तनों एवं नवीन संस्करणों के साथ इस नृत्य को पुनर्जीवित करने का अत्यंत सुन्दर प्रयास किया ।

(प्रशिक्षक का फोटो एवं विद्यार्थीयों के नृत्य करते हुए फोटो)

प्रस्तुतकर्ता विद्यालय
जवाहर नवोदय विद्यालय
उत्तर त्रिपुरा, (त्रिपुरा)